नेताजी का चश्मा : संगमरमर और तार की कहानी

स्वयं प्रकाश की कहानी और रामचन्द्र शुक्ल के निबंध का एक तात्विक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

NotebookLM

जन्म और शिक्षा: 1947, इंदौर।
मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई।

कार्यक्षेत्र: एक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी और राजस्थान में प्रवास।
'वसुधा' पत्रिका का संपादन।

मूल स्वर: मध्यवर्गीय जीवन के कुशल चितेरे।
वर्ग-शोषण के विरुद्ध चेतना और जाति, संप्रदाय, लिंग के भेदभाव का प्रतिकार।

उनकी कहानियाँ हिंदी की वाचिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

NotebookLM

पक्के मकान और
एक मात्र बाज़ार
एक 'उत्साही'
नगरपालिका
लड़कों और लड़कियों
का स्कूल
मुख्य बाज़ार
का चौराहा
(नेताजी की मूर्ति)
सीमेंट का
छोटा-सा कारखाना
दो ओपन एयर
सिनेमाघर
छोटा-सा कस्बा

NotebookLM

एक त्रुटिपूर्ण स्मारक की शारीरिक संरचना

बस्ट (Bust): टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक (लगभग दो फुट ऊँची)।

दोष: आँख पर चश्मा नहीं था।

सौंदर्य: कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फौजी वर्दी में। 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो...' की स्मृति।

प्रशासनिक जल्दबाज़ी

* अच्छे मूर्तिकारों की जानकारी का अभाव, सीमित बजट, और बोर्ड की शासनावधि समाप्त होने का डर।

* **परिणाम:** स्थानीय हाई स्कूल के इकलौते ड्रॉइंग मास्टर (मोतीलाल) को काम सौंपा गया, जिसने महीने भर में मूर्ति 'पटक देने' का वादा किया।

NotebookLM

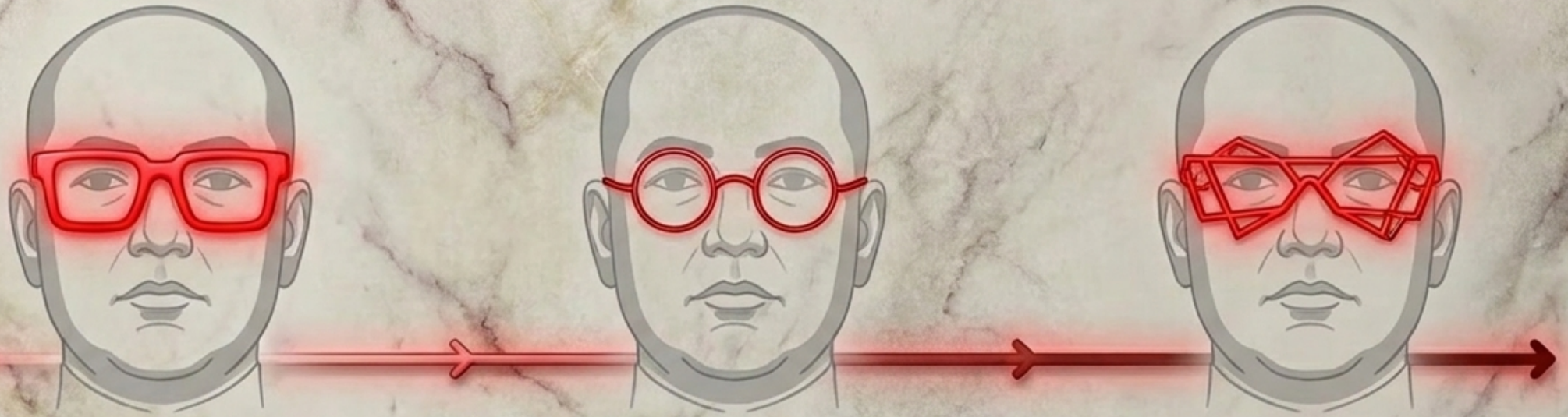

पहला दौरा (कौतुक)

वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

दूसरा दौरा (जिज्ञासा)

मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

तीसरा दौरा (अदम्य लालसा)

बार-बार नया चश्मा। वह पानवाले से पूछने पर मज़बूर हो जाते हैं।

चश्मे का बदलना केवल एक क्रिया नहीं, यह एक मूक संवाद था।

NotebookLM

समाज की कल्पना

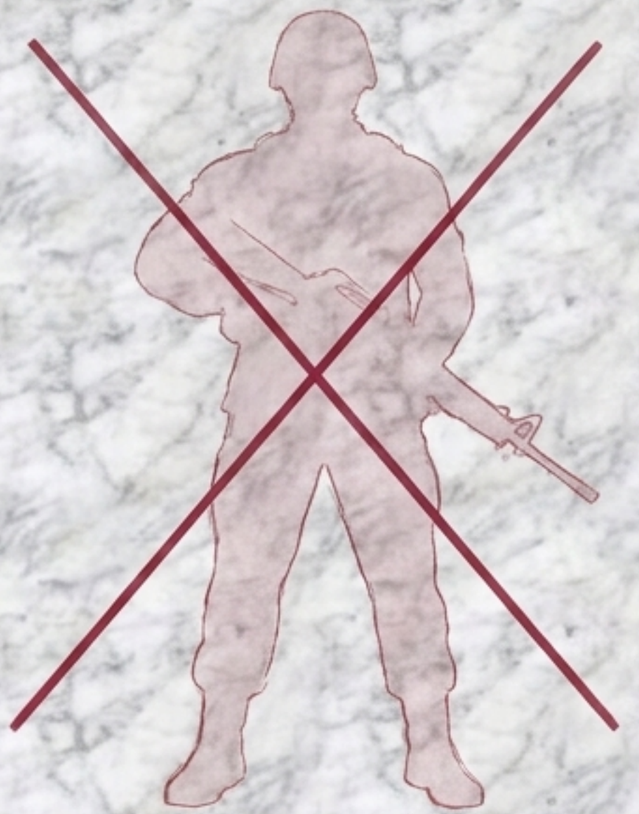

कैप्टन चश्मेवाला

शारीरिक रूप: बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी।
संसाधन: फेरीवाला।

कार्यप्रणाली

1. बिना चश्मे की मूर्ति कैप्टन को ‘आहत’ करती है।
2. वह अपना एक फ्रेम मूर्ति को पहनाता है (मानो क्षमा माँगते हुए)।
3. ग्राहक को वैसा ही फ्रेम चाहिए तो वह उसे दे देता है, और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता है।

NotebookLM

दृष्टिकोण का त्रिकोण

	हालदार साहब (मूल्यांकनकर्ता)	पानवाला (आम जनता)	कैप्टन (सक्रिय देशभक्त)
सामाजिक भूमिका	विचारशील दर्शक	संवेदनहीन, निंदक समाज	मूक कार्यकर्ता
देशभक्ति का पैमाना	सम्मान और अंततः नतमस्तक होना	मज़ाक का विषय (‘पागल है पागल’)	आहत भावना और निरंतर समर्पण
योगदान (Action)	सोचना, महसूस करना और मूल्यांकन करना	केवल बातें बनाना और पान थूकना	अपनी सीमित क्षमता से मूर्ति का दोष दूर करना

NotebookLM

“वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!”

– पानवाला

शारीरिक अपूर्णता को देशभक्ति की अयोग्यता मान लेना।

निस्वार्थ सेवा को समाज द्वारा विक्षिप्तता का नाम देना।

हालदार साहब की पीड़ा:

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।

NotebookLM

शून्य (The Void)

- कैप्टन की मृत्यु।
- मूर्ति की आँखों पर कोई चश्मा नहीं था।
- पान की दुकान बंद थी और पानवाले की आँखों में आँसू थे।

निराशा का क्षण

हालदार साहब का निर्णय: आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे स्मो निकल जाएँगे।

अर्थ: जब व्यक्तिगत मानवीय प्रयास मर जाता है, तो दर्शक भी तंत्र से हार मान लेता है।

NotebookLM

आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं...

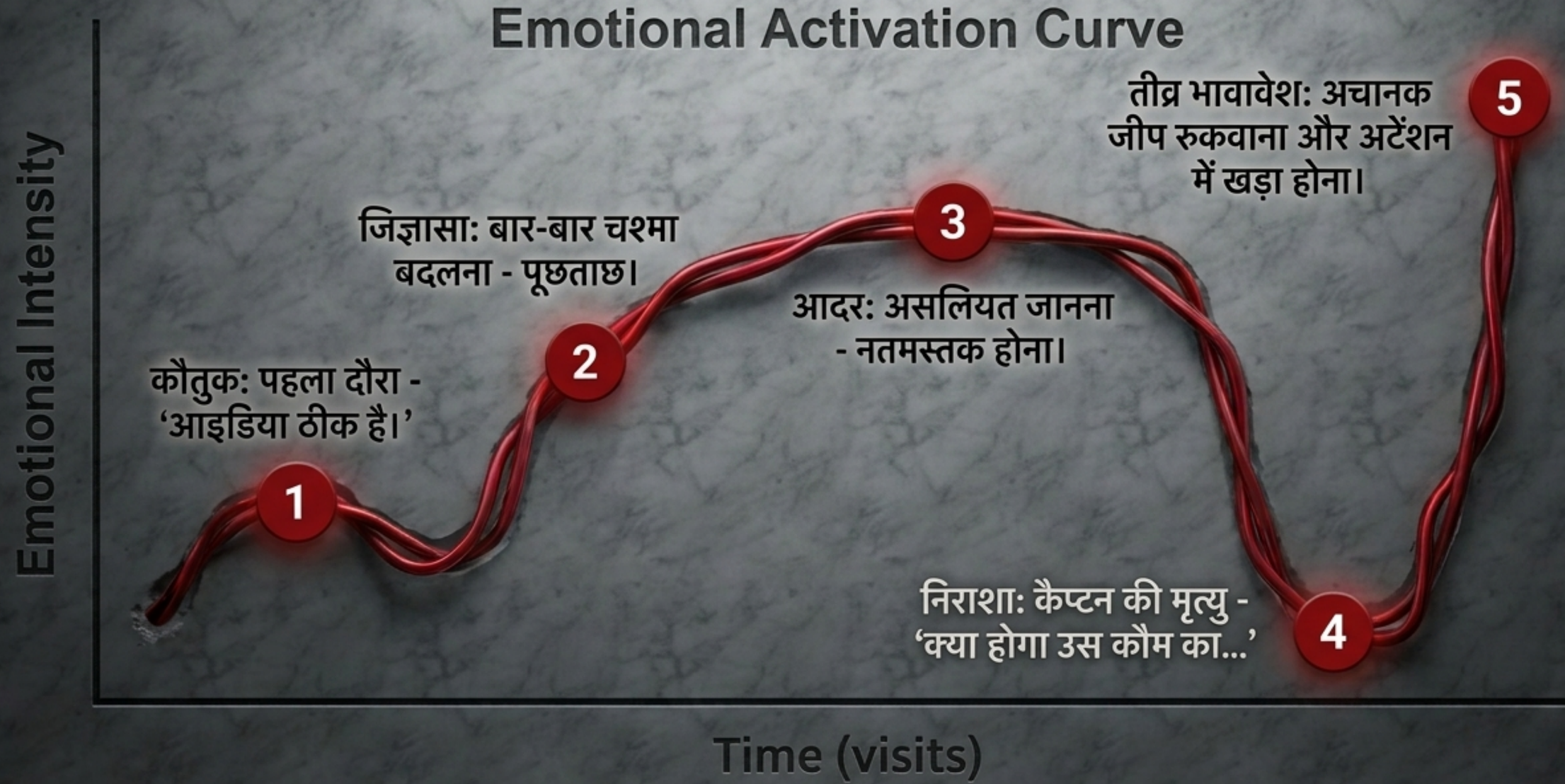

NotebookLM

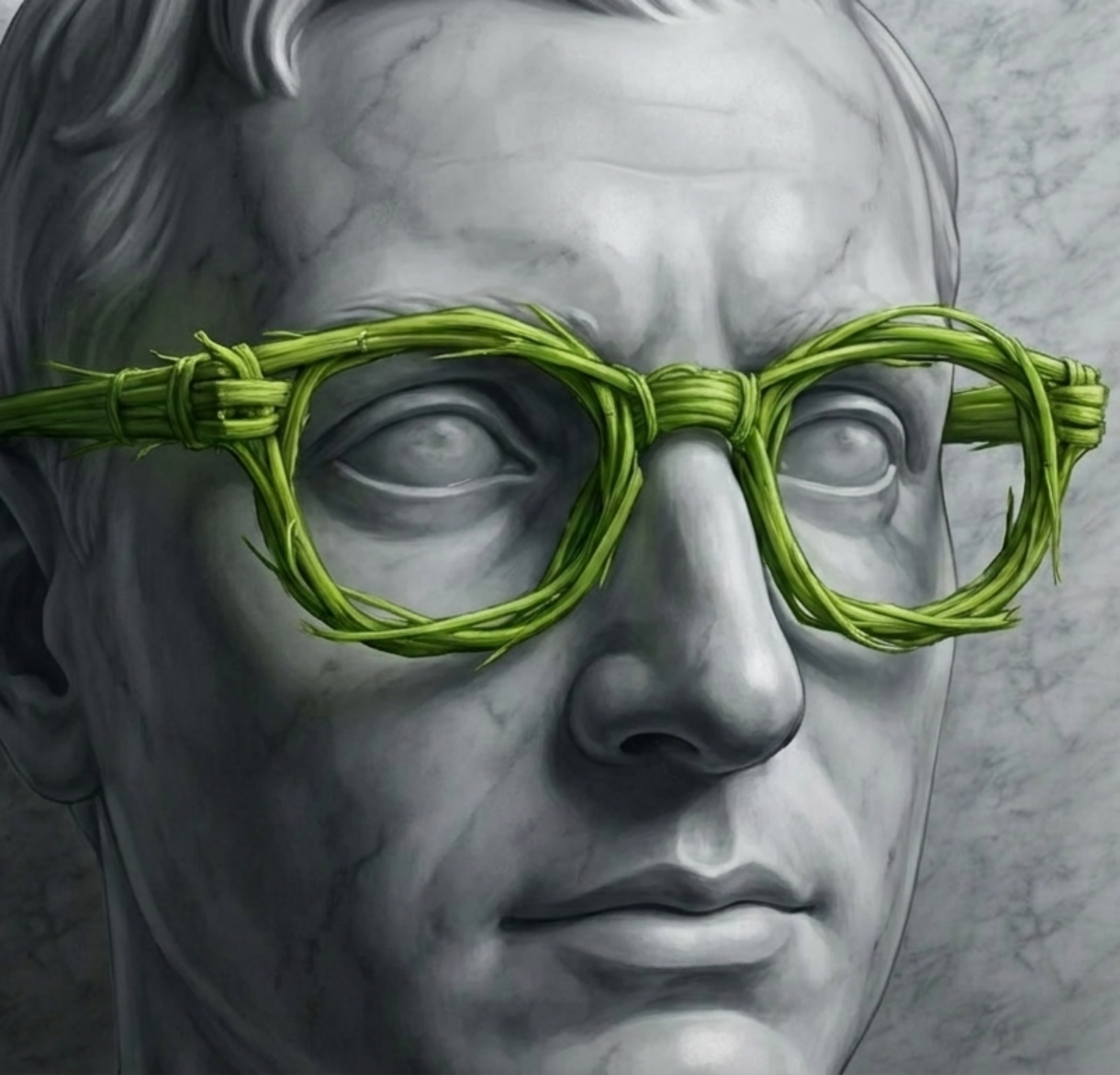

सरकंडे का चश्मा (The Climax)

- मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं।
- हालदार साहब की प्रतिक्रिया: इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

देशभक्ति किसी एक व्यक्ति के साथ नहीं मरती। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी (बच्चों) में हस्तांतरित होने वाला जीवंत संस्कार है। अपूर्ण तंत्र को पूर्ण करने की ज़िम्मेदारी अब भविष्य के हाथों में है।

NotebookLM

> देशभक्ति केवल कोरा ज्ञान या अर्थशास्त्र के आँकड़े नहीं है; यह एक ‘भाव’ है जो रूप-परिचय और साहचर्य से जन्म लेता है। जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है, उनसे उत्पन्न प्रेम ही सच्ची देशभक्ति है।

NotebookLM

सच्चा प्रेम बनाम कोरी बकवास

कोरी बकवास (Hollow Words)

- विदेशी बोली में अर्थशास्त्र की दुहाई देना।
- किसानों और आम जनता के दुख-सुख से दूर रहना।
- कहानी से समानता: तंत्र की विफलता (जिसने चश्मा भुला दिया) या पानवाले का निंदक रवैया।

सच्चा प्रेम (True Action)

- प्रेम हिसाब-किताब नहीं है।
- यह हित-साधन की प्रवृत्ति है, जिसके बिना त्याग का उत्साह नहीं हो सकता।
- कहानी से समानता: कैप्टन जिसने अपनी गरीबी का हिसाब नहीं लगाया, बल्कि प्रेमवश अपने फ्रेम नेताजी को दे दिए।

NotebookLM

देश-प्रेम कोई स्थिर स्मारक नहीं है... यह एक निरंतर बहने वाली प्रक्रिया है।

कैप्टन का तार का फ्रेम हो या बच्चों का सरकंडे का चश्मा—देश का निर्माण करोड़ों गुमनाम नागरिकों के उसी छोटे-छोटे, मूक और निस्वार्थ योगदान से होता है।

"बड़े ही नहीं, बच्चे भी इसमें शामिल हैं।" (स्वयं प्रकाश)

NotebookLM